Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 06, (नवंबर, 2025)
पृष्ठ संख्या 27–29

मुर्गीपालन

डॉ0 अवधेश कुमार यादव[1], डॉ0 अविनाश कुमार राय[2] एवं डॉ0 संजीव राव[3]

[1]विषय वस्तु विशेषज्ञ (पशु चिकित्सा),
[2]विषय वस्तु विशेषज्ञ (मृदा विज्ञान),
[3]विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यान), [3]कृषि विज्ञान केन्द्र, सोनभद्र, भारत।

Email Id: – sanjhort1317@gmail.com

आज मुर्गीपालन एक महत्वपूर्ण कृषि–संबंधी व्यवसाय है जो शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में तेजी से फैल रहा है। यह किसानों के लिए अतिरिक्त आय का एक बड़ा स्रोत बन गया है और यह बेरोजगार युवाओं, महिलाओं और छोटे किसान परिवारों के लिए स्थायी और सुरक्षित रोजगार का माध्यम बन गया है। शहरीकरण, बढ़ती जनसंख्या और पौष्टिक भोजन की मांग के कारण अंडा और चिकन की मांग लगातार बढ़ रही है। इसलिए मुर्गीपालन कृषि–आधारित अर्थव्यवस्था का एक मजबूत स्तंभ है। मुर्गीपालन सफल होने के लिए सही नस्ल चयन, स्वास्थ्य देखभाल और संतुलित आहार आवश्यक हैं। यदि इन सभी बिंदुओं पर ध्यान दिया जाएगा, तो यह संस्था कम लागत में अधिक लाभ प्राप्त करेगी।

मुर्गीपालन का महत्व

मुर्गीपालन बहुत कम है, लेकिन मानव पोषण में महत्वपूर्ण है। बहुत सारे लोग मांस खाते हैं और इसकी लगातार मांग है। यह प्रोटीन का एक अच्छा स्रोत है, साथ ही कैल्शियम, फास्फोरस, थायमिन, नियासिन, राइबोफ्लेविन और बी–कॉम्प्लेक्स विटामिनों। यह संतृप्त वसा और कम कोलेस्ट्रॉल वाला लाल मांस है।

मुर्गीपालन शुरू करने के कुछ आसान उपाय हैं। कम पूंजी वाले शुरुआती किसान 50 से 100 ब्रॉयलर या देशी चूजों के साथ इसका संचालन भी कर सकते हैं। धीरे–धीरे अनुभव व्यावसायिक स्तर पर पहुंच सकता है। कृषि भी भारत में सबसे तेजी से बढ़ रही है। भारत में आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, तेलंगाना, महाराष्ट्र, पंजाब और हरियाणा के कुछ राज्य बड़े पैमाने पर मुर्गीपालन करते हैं। यह ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार, आय और पोषण का एक बड़ा स्रोत बन गया है।

लाखों मुर्गी पालकों की सफलता का पहला चरण सही नस्ल चुनना है, जो देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है। वर्तमान में दो मुख्य नस्लों का उपयोग होता है: लेयर और ब्रॉयलर। मांस उत्पादन के लिए ब्रॉयलर मुर्गियां बनाई गई हैं। 6 से 8 सप्ताह में ही ये 1.5 से 2 किलोग्राम का बाजार–योग्य वजन हासिल कर लेती हैं। लेकिन लेयर नस्लें 250 से 300 अंडे प्रति वर्ष देती हैं। कड़कनाथ, आशा, वनराज, ग्रामप्रिया और अन्य देसी

सुधारित नस्लें भी लोकप्रिय हैं। कम देखभाल में भी रोग–प्रतिरोधी हैं।

मुर्गीपालन के लिए आवास

मुर्गियों की सफलता का दूसरा महत्वपूर्ण हिस्सा सही आवास व्यवस्था है। रहती है एक साफ–सुथरे, संतुलित तापमान वाले स्थान में। पोल्ट्री शेड को पानी न बहने वाले, खुले स्थान पर बनाना चाहिए। 25–30 डिग्री सेल्सियस के तापमान में चूजे बीमार नहीं होंगे। शेड में पर्याप्त जगह, स्वच्छ हवा और रोशनी होनी चाहिए। रोग फैलने की अधिक संभावना होने के कारण हर मुर्गी को पर्याप्त जगह मिलनी चाहिए। शुरुआती पंद्रह से उन्नीस दिनों तक छोटे चूजों को बाहरी तापमान से सुरक्षित रखने के लिए ब्रोडर का उपयोग करना चाहिए।

मुर्गी की मुख्य नस्लें

यदि वैज्ञानिक उपायों का पालन किया जाए तो मुर्गीपालन एक बहुत लाभदायक व्यवसाय बन सकता है। कम निवेश, कम जगह और तेज उत्पादन चक्र नस्ल, आहार, स्वच्छता और नियमित टीकाकरण से कोई भी इस क्षेत्र में सफल हो सकता है। आज पोल्ट्री उद्योग आत्मनिर्भर भारत की ओर एक बड़ा कदम है। यह किसानों की आय को बढ़ाने के साथ–साथ देश की पोषण सुरक्षा में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। इसलिए, मुर्गीपालन एक स्थायी, सुरक्षित और बहुत सारी संभावनाओं वाली कृषि व्यवसाय है।

आहार

मुर्गीपालन में एक संतुलित आहार की आवश्यकता होती है। मुर्गी पालन को सही मात्रा में प्रोटीन, ऊर्जा, विटामिन और खनिज मिलना चाहिए। लेयर और ब्रॉयलर को अलग–अलग भोजन चाहिए। लेयर को आहार दिया जाता है जो अंडा उत्पादन को बढ़ाता है, लेकिन ब्रॉयलर को उच्च ऊर्जा वाला आहार दिया जाता है ताकि वह तेजी से बढ़ सके। आहार को स्थानीय सामग्री जैसे चोकर, सोयाबीन खली, मक्का और खनिज मिश्रण को मिलाकर बनाया जा सकता है या बाजार में उपलब्ध रेडी–मेड फीड से बनाया जा सकता है। पानी 24 घंटे तक उपलब्ध रहना चाहिए क्योंकि पानी की कमी से खाद्य पदार्थों का सही उपयोग नहीं होता और उत्पादन प्रभावित होता है।

स्वच्छता

पोल्ट्री फार्म में स्वच्छता का पालन करना बहुत महत्वपूर्ण है। नियमित रूप से शेड को बाहर और अंदर धोना चाहिए।

मृत पक्षियों को शेड से तुरंत निकालकर संक्रमण को नष्ट करना चाहिए। नियमित रूप से बर्तनों, पानी की टंकियों और फीडर को धोना चाहिए। रोगों को कम करने के लिए बाहरी लोगों

का प्रवेश रोकना चाहिए, जंगली पक्षियों से बचाव करना चाहिए, शेड में जालियां लगाना चाहिए और खेत के आसपास घास–फूस की सफाई करनी चाहिए।

विपणन

पोल्ट्री फार्म उत्पादन में विपणन भी एक महत्वपूर्ण चरण है। मांस या अंडा, सही विपणन से अधिक लाभ मिल सकता है। थोक विक्रेता, स्थानीय बाजार, होटल, रेस्तरां, दुकानदार आदि बिक्री के अच्छे स्रोत हैं। आजकल, कई किसान चिकन और अंडे को सीधे उपभोक्ता तक पहुंचाकर अतिरिक्त लाभ कमा रहे हैं। पैकेजिंग और ब्रांडिंग करके भी पैसा कमाया जा सकता है। देसी अंडों और चिकन की मांग बढ़ने से विशिष्ट पहचान और अधिक मूल्य मिल सकता है।

उत्पादन समय

उत्पादन की पहली खेप ब्रॉयलर फार्म में 45 से 50 दिनों के अंदर तैयार हो जाती है। लेयर फार्म में भी 5 से 6 महीने बाद अंडा उत्पादन होता है, जिससे नियमित आय मिलती रहती है। किसान खेतों में मुर्गी की खाद का उपयोग करके मिट्टी की उपजाऊ शक्ति को बढ़ा सकते हैं या इसे बेचकर अधिक पैसा कमा सकते हैं।

सरकारी बढ़ावा

आज भी मुर्गीपालन को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने कई कार्यक्रम चलाए हैं। किसानों को प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना, DAY&NRLM और विभिन्न पशुपालन विभागों की अनुदान योजनाओं से वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण और तकनीकी मार्गदर्शन मिलता है। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होती है और रोजगार के अवसर बढ़ते हैं।

स्वास्थ्य एवं रोग प्रबंधन

सामान्य रोगः हम अपनी मुर्गियों को असामान्य व्यवहार या बीमारी के लक्षणों के लिए न्यूकैसल, गंबोरो, मारेक, ब्रोंकाइटिस और फाउल पॉक्स में नियमित रूप से देखते रहना चाहिए। हमें बीमार, आक्रामक और चोटिल मुर्गियों को बाहर निकालना चाहिए। दरबे में अंडे खाने वाली मुर्गियों को भी हटा देना चाहिए, क्योंकि यह आदत दूसरी मुर्गियों को भी सिखा देगी। यदि हमारी मुर्गी की भूख खत्म हो जाती है, तो वे दिन भर सोते रहते हैं, खांसते रहते हैं, अपना सिर हिलाते रहते हैं, सांस लेने में कठिनाई होती है या उनकी त्वचा का रंग बदल जाता है।

रोकथाम उपायः मृत मुर्गियों का सुरक्षित निपटान, शेड की साफ–सफाई, जीवरक्षा का पालन, साफ पानी और अच्छे फीडर–वॉटरर

टीकाकरण

- **7 दिवसः** न्यूकैसल (एफ1), 14 दिन गंभीर,
- **28 से 30 दिनः** न्यूकैसल (आर2बी),
- **6 से 8 सप्ताहः** फॉल पॉक्स, लेयर में बार–बार बूस्टर डोज

निष्कर्ष

मुर्गीपालन एक कम लागत, कम जोखिम और उच्च लाभ वाला कृषि–संबद्ध उद्यम है। यदि इसे वैज्ञानिक तरीकों से किया जाए, जैसे सही नस्ल का चयन, उचित आहार, साफ–सफाई, टीकाकरण और बाजार प्रबंधन, तो कोई भी किसान इससे पर्याप्त आय अर्जित कर सकता है। मुर्गीपालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का एक सुरक्षित और भरोसेमंद तरीका है, क्योंकि इसकी मांग भविष्य में बढ़ने की संभावना है।